www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाल रोगों की चिकित्सा

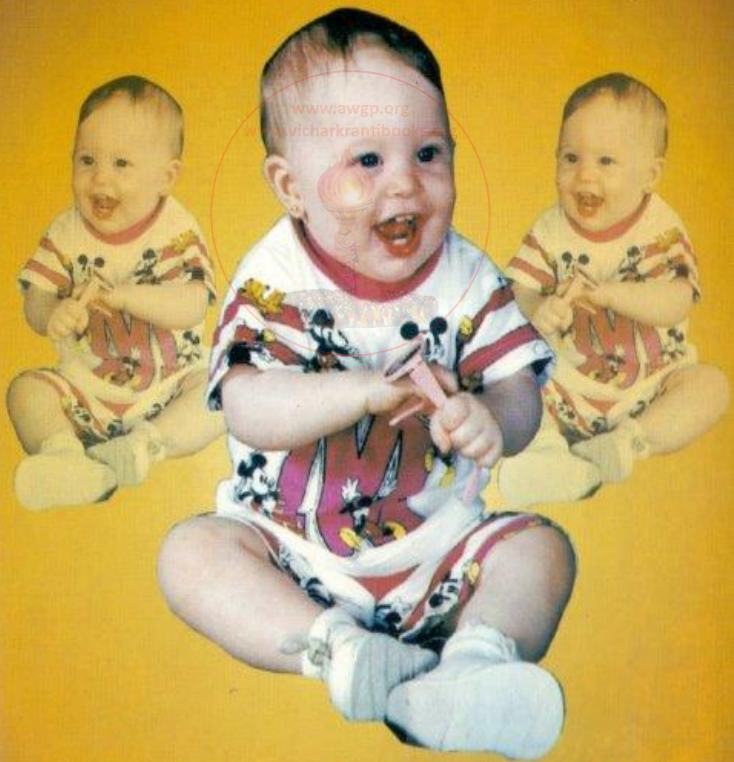

– श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाल रोगों की चिकित्सा

❖

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

❖

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो० ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं० २५३०२००

पुनर्मुद्रित सन् २०१४ मूल्य : ७.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूमिका

यों तो इस जमाने में घर-घर बीमारियों की धूम है परंतु बीमारों में अधिक संख्या बालकों की ही देखी जाती है। बड़ी आयु का मनुष्य तो रोगों के धक्कों को किसी हद तक बरदाश्त कर लेता और उनसे सामर्थ्य भर लड़कर अपने स्वास्थ्य की रक्षा भी करता है, पर छोटे बालक अपनी कमजोरी के कारण इतना सब नहीं कर पाते, जिससे वे आसानी से रोगग्रस्त हो जाते हैं। फिर उनमें शक्ति भी नहीं होती कि रोग के आक्रमण से संघर्ष करके बीमारी को दूर भगा सकें। इसलिए बालक अकसर बीमार पड़ते हैं और अनेक बार उन्हें जीवन से हाथ धोना पड़ता है।

जहाँ वैद्य, डॉक्टरों की आसानी से पहुँच नहीं हो पाती, उन लोगों की सुविधा के लिए इस पुस्तक में कुछ ऐसे नुसखे संग्रहीत किए हैं जो बीमार बालकों को निरोग बनाने में सहायता दे सकें। रोग को और बालक की शक्ति देखकर यदि इस पुस्तक के आधार पर चिकित्सा की जावे, तो हमारा विश्वास है कि स्वल्प साधन संपन्न व्यक्ति भी अपने बालकों को बीमारी के चंगुल से छुड़ा सकते हैं।

जो लोग चिकित्सा व्यवसाय करते हैं, उनके लिए भी इस पुस्तक में अच्छी जानकारी है। वे इन नुसखों के आधार पर अपनी सेवा-प्रणाली को अधिक सूक्ष्म बना सकेंगे। हमारी धारणा है कि यह पुस्तक बालकों के लिए एक अच्छे अभिभावक की भाँति उपयोगी सिद्ध होगी।

—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाल रोगों की चिकित्सा

रोगों का कारण है—प्रकृति की प्रतिकूलता। प्राकृतिक नियमों के विपरीत आचरण करने से अस्वस्थता का दंड सहना पड़ता है। चाहे कोई बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष, मनुष्य हो या पशु-पक्षी—यह नियम सब पर एक समान लागू होता है। जो भी प्रकृति के विपरीत आचरण करेगा, उसे रोगों का शिकार बनना पड़ेगा और फलस्वरूप नाना प्रकार की पीड़ाएँ सहते हुए अकाल मृत्यु के मुख में जाना पड़ेगा।

बालक भी इसी नियम के अनुसार रोगी होते हैं। पर उनकी प्रकृति प्रतिकूलता का कारण उनके माता-पिता पर, अभिभावकों पर रहता है। वे बेचारे अबोध और अशक्त होने के कारण स्वेच्छा से जीवनयापन की व्यवस्था नहीं कर सकते, इसलिए उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। अभिभावक उन्हें जैसे भी रखें, जिस प्रकार भी आहार-विहार का अवसर दें, उसी का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

बालकों की स्वास्थ्य-रक्षा के लिए अभिभावकों का भारी उत्तरदायित्व है। माता-पिता को चाहिए कि इस बात की पूरी-पूरी सावधानी रखें कि बालक के कोमल शरीर पर कोई ऐसा दबाव न पड़ने पावे जिससे वह रोगग्रस्त हो जावें।

ऋतु-परिवर्तन की संधिवेला में जो हलचल होती है उसे बालकों का कोमल शरीर बरदाश्त नहीं कर पाता। कड़ी सरदी या तीव्र धूप को बालक देर तक नहीं सह सकता, उसका शरीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगभग उतने ही तापमान में स्वस्थ रह सकता है जितनी गरमी कि स्वयं उसके शरीर में है। इसलिए अधिक गरम या अधिक ठंडे तापमान से बालकों की रक्षा करनी चाहिए। जलवायु का भी प्रश्न ऐसा ही है। जिन स्थानों के जलवायु में अस्वास्थ्यकर कीटाणु या रासायनिक पदार्थ रहते हैं, वहाँ छोटे बालकों का जीवन खतरे में रहता है। उनका स्वास्थ्य अच्छे जलवायु में ही विकसित हो सकता है।

प्रसव काल के पश्चात एक वर्ष तक तो बालकों की ओर बहुत ही अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस संबंध में पर्याप्त ज्ञान और साधन के अभाव में हमारे देश के एक-तिहाई बालक एक वर्ष से कम की आयु में ही काल के गाल में समा जाते हैं। शेष में से आधे बालक किशोर होने से पूर्व अपनी जीवनयात्रा समाप्त कर देते हैं। इस दु:खदायी बालमृत्यु का कारण वे परिस्थितियाँ हैं, जिनके कारण बालकों का उचित पालन-पोषण नहीं हो पाता। इसी दुर्भाग्य के कारण अधिकांश बालकों को रोगग्रस्त रहना पड़ता है। ऐसे बालक बहुत ही कम मिलेंगे जिनको 'स्वस्थ' कहा जा सके।

इस खेदजनक स्थिति से बचने के लिए बालकों के संरक्षकों को इस बात की पूरी-पूरी सावधानी रखनी चाहिए कि अबोध बालकों को प्रकृति विरोधी संघर्ष में कम से कम लड़ना पड़े। सरदी-गरमी की अति से जहाँ उनकी रक्षा करना है, वहाँ उनके आहार-विहार और जलवायु को भी ठीक रखना है तभी बालकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा संभव है।

आज फैशन के नाम पर, प्यार के नाम पर, देवी-देवताओं के नाम पर बालकों के ऊपर भारी अत्याचार किए जाते हैं। इन अत्याचारों के दबाव से बेचारे अपने स्वास्थ्य से हाथ धो बैठते हैं। लोग समझते हैं कि हम बच्चों के हित के लिए यह सब कर रहे हैं, पर वस्तुत: होता है इससे उनका अनहित। लाड़-प्यार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिनभर गोदी में लटकाए रहना, जल्दी-जल्दी अधिक मात्रा में गरिष्ठ, चटोरे-स्वाद के भोजन कराना, खेलने-कूदने से रोकना, जेवर पहनाना आदि बातें ऐसी है, जिन्हें लोग प्यार की दृष्टि से करते हैं, पर वस्तुतः इनका परिणाम शत्रुता के समान होता है। इन कृत्रिम आचरणों के कारण बालकों का विकास रुकता है, रक्त-संचरण में बाधा पड़ती है और अंग-प्रत्यंगों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, फलस्वरूप वे रोग ग्रस्त होते रहते हैं। ज्यादा लड़ैते, अमीरी के चोचलों से दबे हुए बालक जितने रोगी होते हैं इतने गरीबों के, प्रकृति की गोद में स्वच्छंद विचरने वाले बालक बीमार नहीं होते। देवी-देवता, भूत-पलीत, हौआ, जू-जू का भय दिखाना या इनके संस्कार उनके मन पर जमाना, इस चक्कर में उन्हें पीर-मुरीदों की बेढंगी क्रियाओं से परेशान कराते फ़िरना, उनको बीमार बना देने का एक अच्छा-खासा कारण है। हमें चाहिए कि अपने बालकों की इन बातों से रक्षा करें।

जिन बालकों को प्रकृति के अनुकूल जीवन बिताने दिया जाएगा, उनकी स्वास्थ्य-रक्षा प्रकृति स्वयं कर लेगी। वे बार-बार रोगों के शिकार न होंगे। यदि कभी ऐसा अवसर आ भी जाए, तो वे बहुत कुछ अच्छे हो जाते हैं। जब तक बालक दुग्ध पीता है, तब तक उसके आहार-विहार का आधार उसकी माता होती है। माता जैसा भोजन करेगी, वैसा ही दुग्ध बालक को मिलेगा। माता जिस प्रकार के मानसिक हर्ष-विषादों में निमग्न रहेगी, उसी के अनुसार बालक की मानसिक स्थिति पर प्रभाव पड़ेगा और उसी आधार पर बालक का शारीरिक निर्माण होगा। इसी से हमारे पूज्यनीय ऋषि-मुनियों ने गर्भिणी और प्रसूता स्त्रियों के लिए यह आदेश किया है कि वे सात्त्विक आहार करें, आनंददायक, प्रसन्नतावर्द्धक वातावरण में रहें, प्रकृति के विपरीत कोई अस्वाभाविक रहन-सहन न अपनावें, कोई उद्धत आचरण न करें। कारण स्पष्ट कि माता की इन क्रियाओं का प्रभाव बालक के ऊपर पड़े बिना नहीं रह सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यदि उसका आचरण अनुपयुक्त है तो यह हो नहीं सकता कि बालक रोगी, दुर्बल और अल्पजीवी न हो। इसलिए छोटे बालकों की शारीरिक, मानसिक सुरक्षा करनी है तो उनकी माताओं के संबंध में पूरी-पूरी सावधानी बरती जानी आवश्यक है। जैसा आहार बालक के पेट में पहुँचना है वैसा ही आहार उसकी माता को दिया जाना चाहिए। बालक का मस्तिष्क जैसा बनाना हो वैसे ही विचारों से माता का मस्तिष्क भरा रहना चाहिए। गर्भधारण के दिन से लेकर जब तक बालक दुग्ध पीता है, तब तक बालक का निर्माण माता के द्वारा ही होता है और यह समय चाहे थोड़ा भले ही प्रतीत हो, पर इतना महत्त्वपूर्ण है कि बालक के सारे जीवन की आधारशिला ही इसे कहा जा सकता है। बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के निर्माण के लिए इस समय पूरी सावधानी के साथ माता की देखभाल भी रखनी चाहिए।

बच्चे राष्ट्र की निधि हैं। उनकी स्वस्थता ही राष्ट्र की स्वस्थता है। निरोग बालक ही निरोग समाज का निर्माण करते हैं। इसलिए हमें उन सभी उपायों की खोज और जानकारी प्राप्त करनी चाहिए जिससे बालक निरोग रहकर स्वस्थ, पुष्ट और सुविकसित जीवन बना सकें।

बालकों के रोगी होने के कुछ कारण

आयुर्वेद ग्रंथों में बच्चों के रोगी होने के निम्न कारण बताए गए हैं—

(१) माताएँ बच्चे को जब अपना दूध नहीं पिलातीं और गौ या अन्य किसी प्रकार के दूध पिलाती हैं, तो बालक रुग्ण हो जाता है।

(२) बालक को अधिक या जल्दी-जल्दी दूध पिलाने से भी वह रोगग्रस्त हो जाता है।

(३) माता की अजीर्णता की अवस्था में भी वह दूध पीकर बीमार हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(४) अत्यंत गरम या अत्यंत ठंडा दूध पीने से बालक के शरीर में रोग हो जाते हैं।

(५) आधी रात के लगभग दुग्धपान कराने से वह रोग युक्त हो जाता है।

(६) माता के अपथ्य से भी दूध पीने वाला बच्चा दुखी रहता है।

(७) दुग्ध या अन्नभोजी बालक को मैदा का गरिष्ठ पदार्थ खिलाने से रोग युक्त होता है।

(८) ठंडी खिचड़ी या चावल आदि पदार्थ खाने से रोग युक्त होता है।

(९) मलिन वस्त्र पहनाए रखने तथा नित्य स्नान न कराने से भी बालक बीमार हो सकता है।

(१०) मिट्टी या खरिया आदि के खाने से भी बालक के उदर में रोग हो जाते हैं।

(११) अधिक पौष्टिक पदार्थों का सेवन कराने से।

(१२) बच्चे को कम सोने देने से।

(१३) उसके मल-मूत्र की अच्छी तरह सफाई न होने से।

(१४) उसको ठीक समय पर दुग्ध आदि उनकी खुराक न मिल सकने से।

(१५) किसी बीमार से छूत की बीमारी लग जाने के कारण या अन्य रोगी बालकों का जूठा खाने से बालक बीमार हो जाता है।

(१६) बच्चे को हर समय गोद में लिए रहने से वह रोगी हो जाता है।

(१७) बालक को अधिक व मैले कपड़े पहनाने से उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

(१८) बुरे स्थानों में बच्चे के खेलने से।

(१९) खेलने के लिए टीन और रबर आदि के खिलौने देने से।

(२०) भोजन में चाय या बरफ देने से।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(२१) भयानक रूप देखने से अथवा भयानक शब्द सुनने से।

(२२) माता के अशुद्ध रहने से।

(२३) बच्चे के शरीर में तेल आदि की मालिश न करने से।

(२४) बच्चे को हर किसी स्त्री को खिलाने के लिए दे-देने के कारण भी उसके शरीर में रोग लग जाता है।

(२५) प्राय: देखा जाता है कि घर के काम-धंधे पूरे करने के लिए माताएँ बालक को अफीम या पोश्त का नशा कराके एक स्थान पर लिटा देती हैं जिससे घर के काम को वेखटके कर लेती हैं, किंतु इससे भारी हानि यह होती है कि बच्चा कभी ऐसे नशे में आ जाता है कि फिर कभी जगता नहीं, इसलिए उसे नशीली वस्तुओं से भी बचाना चाहिए।

(२७) बच्चे को खिलाने-पिलाने के बाद स्नान नहीं कराना चाहिए, इससे उसके रुग्ण हो जाने की आशंका है।

(२८) प्रत्येक वस्तु को जो भी पड़ी हुई दीख जाती हैं मुँह में दे लेने के कारण बच्चे के स्वास्थ्य में खराबी आ जाती है।

बालकों को स्वस्थ रखने के कुछ नियम

(१) बालकों का शरीर अत्यंत कोमल होता है। इसलिए उसे बहुत ही हलके हाथों से उठाना चाहिए। जिससे बालक के कोमल शरीर में किंचित भी कष्ट न पहुँचने पावे।

(२) बालक खिलाते समय ऊपर-नीचे उछालना नहीं चाहिए, इससे बालक डर जाता है तथा वायु कुपित हो जाती है।

(३) सोते हुए बालक को अचानक नहीं जगाना चाहिए क्योंकि सहसा जगाने से उसके हृदय में भय प्रवेश कर जाता है, जिससे रोग हो जाता है।

(४) छोटे बालक को अधिक जमीन पर नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय तक अधिक बैठने की शक्ति बालक में नहीं होती है और बड़े होने पर उसके कुबड़े होने की आशंका रहती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(५) बालक के हाथ में जो चीज पड़ जाती है, उसे ही मुँह में देकर चबाने लग जाता है इसलिए उसके हाथ में कोई ऐसी वस्तु न जानी चाहिए, जो मुँह में देने पर अटक जाए और बालक के प्राण संकट में पड़ जाएँ।

(६) बालक के हाथ-पैर हिलते रहने से वह बड़ा प्रसन्न रहता है इसलिए उसे पालने में डालकर हिलाते रहना चाहिए जिससे उसकी पाचनशक्ति ठीक रहती है और वह प्रसन्न रहता है।

(७) बालक का सबसे उत्तम भोजन उसकी माँ का दुग्ध है यदि माँ के स्तनों में बच्चे के लिए पर्याप्त दूध न हो तो दिन में कई बार थोड़ा-थोड़ा गौ या बकरी का दूध पानी मिलाकर देना श्रेष्ठ है।

(८) यदि बालक को रबर या नालीदार शीशी से दूध पिलाया जाए, तो उसे बार-बार गरम पानी से धोते रहना चाहिए जिससे प्रथम बार की गंदगी दोबारा दूध पीते समय बालक के पेट में न पहुँच जाए।

बालकों के रोग

बालक जब बड़ा हो जाता है और बोलने लगता है, तब वह अपने कष्ट को बता देता है, परंतु छोटे बालक जिन्होंने बोलना आरंभ नहीं किया है, अपनी व्यथा को कैसे प्रकट कर सकते हैं? उनके कष्ट को जानने के लिए उनके अंग-प्रत्यंगों पर दृष्टि डालनी होती है कि कोई अंग सूजा हुआ, अधिक गरम, कठोर, फूला हुआ या किसी विलक्षण स्थिति में तो नहीं है। बालक किसी अंग को बार-बार स्पर्श करके रोता तो नहीं है, पेट की खराबी, ज्वर आँखें, दुखना, सिरदरद, खाँसी आदि का अनुमान लक्षणों को देखकर लगा लिया जाता है, यद्यपि बालक उन कष्टों को वाणी से प्रकट नहीं कर पाता। यह अनुमान ऐसे चतुर व्यक्तियों द्वारा लगाए जाने चाहिए, जो बच्चों की प्रकृति के बारे में अच्छा अनुभव रखते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गलत निदान किया गया तो उसकी चिकित्सा भी गलत होगी, फलस्वरूप लाभ के स्थान पर हानि होने की आशंका रहेगी। इसलिए छोटे बालकों के रोगों का निर्णय करते समय बहुत सूक्ष्मबुद्धि और सावधानी से काम लेना चाहिए।

साधारण रोगों की कुछ सरल ओषधि

नियम यह है जब तक पहला बालक पाँच वर्ष का न हो जाए, तब तक दूसरा उत्पन्न न होना चाहिए। परंतु अकसर देखा जाता है कि माता-पिता इतना संयम नहीं रखते और जब तक पहला बालक दूध छोड़ने नहीं पाता, तब तक माता दूसरा गर्भ धारण कर लेती है। ऐसी अवस्था में जो दूध उत्पन्न होता है, वह भारी, कुपाच्य एवं अनुपयुक्त होता है जिसे पीने वाले बालक प्राय: अस्वस्थ हो जाते हैं।

माता के पोषण रक्षक तत्त्व दूध द्वारा खिंचते जाने से एक ओर तो गर्भस्थ बालक निर्बल होता है दूसरी ओर उस अनुपयुक्त दूध को पीने वाला बालक भी अस्वस्थ होता जाता है। उसे प्राय: खाँसी, उलटी, अपच, दुर्बलता, तंद्रा, अरुचि, चिड़चिड़ापन, दस्त, पेट बढ़ जाना, लार बहना आदि रोग हो जाते हैं। ऐसे बच्चों के लिए माता का दूध बंद करके यदि स्वस्थ धाय की व्यवस्था की जा सके, तो उचित है। ऐसा न हो सके तो बकरी या गाय के दूध पर रखना चाहिए।

गर्भिणी माता का दूध पीने से उत्पन्न हुई अस्वस्थता के लिए निम्नलिखित प्रयोग बहुत लाभदायक देखा गया है—

मुनक्का, सफेद जीरा, अमलतास का गूदा, अजवाइन, पुराना गुड़, छोटी हर्र, गुलाब का फूल, पसरबंद चौकिया सोहागा, बालबच, वायबिडंग, सनाय की पत्ती, हर्रा के फल का छिलका, सोंफ की जड़—इन सब चीजों को अधकुट करके रख लें। इसमें से एक मात्रा पानी में डालकर पकावें। जब आधा पानी जल जाए तो इसे नीचे उतारकर छान लें। उसमें २ रत्ती खींचकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नोन का चूर्ण मिलाकर पिला दें, इस प्रकार पारिगर्भक रोग नष्ट होने के साथ-साथ अन्य रोग भी जैसे अजीर्ण, उदर में पीड़ा, प्लीहा और पेट के संपूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं। ज्वर व खाँसी से रक्षा होती है। यह काढ़ा यदि निरोगावस्था में पिलाया जाए तो भी अत्यंत लाभदायक है और किसी भी रोग के होने की संभावना नहीं रहती। इस काढ़े की मात्रा यह है कि जब बालक ६ महीने का हो तो १॥ माशे और एक वर्ष का हो तो ३ माशे तथा ३ साल की आयु वाले को ६ माशे देना चाहिए।

नाभि पक जाना

कभी-कभी नाल काटते समय बालक की नाभि गहरी न होकर ऊपर को खिंच आती है और वह हाथी की सूड़ की तरह लटकती रहती है उसे 'नाभिशुंड' कहते हैं।

चिकित्सा—

(१) नाभि को हाथ से दबाकर पका स्थान बिठाकार एक गद्दी रखकर वहीं बाँध देना चाहिए। इस क्रिया के थोड़े ही दिन करने से लाभ होता है।

नोट—नाल के कटने पर यदि घाव सूखा न हो तो नाभि-पाक नाम का रोग हो जाता है।

उपाय—मिट्टी को सानकर गोला बनाकर सुखा लेना चाहिए। फिर उसे आग में तापकर गौ-दुग्ध में बुझाकर उसी गोले से नाभि पर सेंक करना चाहिए। इससे सूजन दूर हो जाती है।

(२) नाभि के पक जाने पर हरे धनिए की पत्ती पीसकर रखनी चाहिए।

(३) लाल चंदन को महीन पीसकर और कपड़े में छानकर नाभि के घाव पर बुरकना चाहिए, इससे कुछ ही दिनों में घाव भर जाएगा।

(४) मुलहठी २ तोला, लोध २ तोला, प्रियंगु २ तोला, हलदी २ तोला—इन सब चीजों को महीन पीसकर आधपाव काले तिलों के तेल में पकावें। पानी पक जाने पर शेष बचे हुए तेल को दो-तीन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिन तक चार-पाँच बार लगाने से नाभि-पाक (नाभि का घाव) आदि सभी दूर हो जाते हैं।

यदि नाभि-पाक के घाव में मवाद भर गया हो तो उसे यह तेल लगाने से पूर्व घाव को त्रिफला के काढ़े से धो लेना अच्छा है।

(५) नाल काटते ही नाभि का घाव सूख नहीं जाता किंतु कभी-कभी यह नाल व्रण की आकृति में बदल जाता है।

इसका इलाज करने के लिए बकरी की मेंगनी जलाकर घाव पर बुरक देना चाहिए।

कब्ज से उत्पन्न होने वाले रोग

जब बालक अधिक दूध पी लेते हैं, तो परिणामस्वरूप वमन करना, दस्तों में रुकावट, अजीर्ण, अतिसार, मुँह से लार डालना इत्यादि विकार होने लगते हैं। ऐसी अवस्था में अल्प मात्रा में दुग्ध सेवन कराना चाहिए।

औषधियाँ—

(१) आम की गुठली, धान का लावा और सेंधा नमक—ये तीनों चीजें बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर दूध या शहद के साथ बलानुसार बच्चे को देना चाहिए। इससे बालक का दूध पटकना बंद हो जाता है।

(२) छोटी इलायची, नागकेशर और तज का चूर्ण बनाकर शक्ति अनुसार शहद या दुग्ध के साथ पिलाने से दूध की वमन बंद होती है।

(३) पीपल और काली मिर्च का चूर्ण शहद या दुग्ध के साथ खिलाया जाए, तो बच्चे का मुँह से पटकना बंद हो जाता है।

(४) नागरमोथा, अतीस, काकड़ासिंगी और छोटी पीपल का चूर्ण दुग्ध या शहद के साथ चटाया जाए, तो बच्चे का दूध पलटना बंद हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(६) पीपल की छाल जलाकर उसे ६ गुने पानी में घोलकर रख दें, जब पानी नितर आवे तो बालक को पिला दें। इसके पिलाने से वमन शांत हो जाती है।

(७) गौ-दुग्ध में चूने का जल मिलाकर उसमें सौंफ का अरक बराबर भाग में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा कई बार पिलाना चाहिए।

(८) कैथ, बेर और मकोय इन तीनों की पत्तियाँ एक साथ पीसकर इनकी लुगदी बनाकर बालक के सिर पर लेप करने से वमन और दस्त दोनों ही शांत होते हैं।

(९) पीपल और मुलहठी—इन तीनों को पीसकर बिजौरे और नीबू के रस में चटाया जाए, तो बालक की वमन नष्ट होती है।

(१०) सोना गेरू महीन पीसकर शहद के साथ चटाया जाए, तो बालक की वमन को आराम होता है तथा खाँसी भी शांत होती है।

(११) बालक को वमन होती हो तो पिसी-छनी कुटकी को शहद में मिलाकर चटाना चाहिए।

(१२) यदि बालक को दुग्ध पीने से अजीर्ण हो तो आम की पुरानी गुठली, अनार की कली, धाय के फूल, अतीस, छोटी हर्र, पोदीना की सूखी पत्ती, बबूल की पत्ती, बेलगिरी, बेलपत्र, सेंधा नमक, सफेद जीरा और सोंफ—इन सबको बराबर-बराबर गोली बनाकर गरम पानी के साथ दोनों समय देना चाहिए। इससे दुग्ध से उत्पन्न संपूर्ण विकार नष्ट हो जाते हैं।

मिट्टी खाना

किसी-किसी बच्चे को मिट्टी खाने की आदत पड़ जाती है और वह छुड़ाए भी नहीं छोड़ता। यदि प्रत्यक्ष में रोका जाए तो पीछे छिपकर खाने लगता है जिसका परिणाम यह होता है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके पेट में अनेक प्रकार के रोग मंदाग्नि, अजीर्णता आदि उत्पन्न हो जाते हैं।

मृत्तिका-भक्षण से उत्पन्न विकारों पर इलाज

(१) पका हुआ केला और शहद साथ-साथ खिलाने से मिट्टी खाने का विकार दूर होता है।

(२) पीपल, मुलहठी, केशर और निसोत—इन चारों चीजों का काढ़ा बनाकर उसमें पोतनी मिट्टी डालकर धूप में सुखा डालें। जब सूख जाएँ तो फिर इसी तरह भिगोकर सुखावें। इस तरह चार बार सुखाने के अनंतर थोड़ी सी मिट्टी बच्चे को खिलाने से खाई हुई पेट की मिट्टी दस्तों द्वारा निकल जाती है और पेट साफ हो जाता है।

उदर-शूल और उसकी चिकित्सा

शूल रोग ८ प्रकार का होता है जिससे पेट में पीड़ा, वमन, अफरा और बेचैनी आदि रोग हो जाते हैं।

चिकित्सा—

(१) मिट्टी को पानी में डालकर ढीली करके उसे गरम कर पेट पर सेंक करना चाहिए। इससे उदर-शूल नष्ट होता है।

(२) छोटी इलायची, सेंधा नमक, भारंगी, सोंठ और भुनी हुई तलाब हींग—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनाकर उष्ण जल में घोलकर पीने से बालकों का उदरशूल नष्ट होता है और पेट का फूलना बंद होकर पाचनशक्ति बढ़ती है। इसकी मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती तक है।

(३) काले तिलों को पीसकर पोटली बनालो। पोटली को गरम कर सेंक करने से शूल रोग अच्छा हो जाता है।

(४) सरसों के बराबर हींग का फूला माँ के दूध में या गरम पानी में बच्चे को खिलाने से पेट की पीड़ा और उसका फूलना बंद हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अफरा क्या ?

खाए हुए पदार्थ का जब पूर्ण परिपाक नहीं हो पाता और वह दुष्ट वायु के कारण सूखकर अपने मार्ग से नहीं निकल पाता तो उसे आनाह, अफरा या बद्ध-कोष्ठ कहते हैं।

लक्षण—अफरा रोग में पेट का फूलना, मल-मूत्र में रुकावट, मस्तिष्क में पीड़ा, शूल, तृषा, वमन और शरीर में भारीपन, मूर्च्छा आदि रोग हो जाते हैं।

इलाज—३ माशे हर्र, आधा तोला मुनक्का दोनों को पानी में पीसकर थोड़े जल में घोलकर कपड़े में छानकर थोड़ा-थोड़ा तीन-चार बार पिलाने से अफरा दूर होता है।

(२) ६ माशे गुलकंद, आधा छटाँक गरम जल में डालकर कुछ समय बाद ठंढा-ठंढा पिलाने से अफरा दूर होकर दस्त साफ होता है।

(३) छोटी इलायची फूला की हुई, तलाब हींग, भारंगी, सेंधा नमक और सोंठ बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लें, दो-दो घंटे बाद गरम जल के साथ खाने से पेट का फूलना, पीड़ा होना और कब्जी आदि रोग दूर होते हैं। मात्रा एक रत्ती से डेढ़ मासे तक।

(४) शाम को एक छुहारा थोड़े पानी में कुचलकर भिगो दें और सबेरे उसे हाथ से मलकर, छानकर इस जल में से तीन बार पिलाने से बालकों का अफरा दूर होता है।

(५) दो रत्ती से डेढ़ माशा तक रेबंद चीनी का शरबत चटाने से या जल में घोलकर पिलाने से अफरा मिट जाता है।

अफरा पर लेप करने के प्रयोग

(१) अंडी और चूहे की विष्टा को बराबर-बराबर लेकर पानी के साथ पीसकर गुनगुनाकर दूध पीने वाले छोटे बालकों के पेट पर लेप करने से दस्त साफ होता है और पेट की सूजन मिट जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) साबुन और मुसब्बर बराबर भाग लेकर पानी में पीसकर गुनगुना करके दूध पीने वाले छोटे बालकों की नाभि और पेडू पर लेप करने से दस्त होकर पेट हलका हो जाता है और सूजन नहीं रहती।

(३) हींग को पानी में घोलकर उसका लेप नाभि पर करना चाहिए। इससे भी अफरा मिट जाता है।

(४) सरसों की खली का गुनगुना लेप पेट पर करना चाहिए।

(५) मदार के पत्तों पर घी चुपड़कर उन्हें सेंककर बालक के पेट पर बाँधने चाहिए।

कृमिरोग और उसकी चिकित्सा

बालकों के पेट में कृमि (केंचुआ और सूत के समान पतले छोटे-छोटे कीड़े) उत्पन्न होते हैं, तब दिनोंदिन शरीर क्षीण होता जाता है। पेट में मंदाग्नि और मीठी पीड़ा हुआ करती है। प्राय: निद्रावस्था में बालक दाँत चबाया करता है। कीटाणुओं की अधिकता के कारण कभी-कभी मिरगी के समान मूर्च्छा भी हो जाती है।

चिकित्सा—

(१) वायबिडंग का चूर्ण यदि बच्चे को शहद के साथ चटाया जाए तो कीटाणुओं का नाश हो जाता है।

(२) प्याज का रस पिलाने से भी कृमि नष्ट होते हैं। इसकी मात्रा ४ रत्ती से ३ माशे पर्यंत है और एक सप्ताह तक शाम-सबेरे दोनों समय पिलाना चाहिए।

(३) सागौन की पत्ती और काकड़ासिंगी दूध में पकाकर दुग्ध को हाथ-पाँव के तलुओं पर एक सप्ताह नित्यप्रति दिन में २-३ बार मलने से सोने में दाँतों का चबाना बंद होता है।

अजीर्णोपचार

अजीर्ण से मूर्च्छा, प्रलाप, लार बहना, वमन, ग्लानि और भ्रम के उपद्रव होते हैं। कभी-कभी मृत्यु तक हो जाती है। बालकों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूध का न पचना और बार-बार वमन करना अजीर्ण का लक्षण है। दूषित दूध पीने के विकार से भी अजीर्ण हो जाता है।

औषधि—बड़ी हरड़, सेंधा नमक एक-एक तोला लेकर कपड़छन चूर्ण बनाकर एक रत्ती से डेढ़ मासे पर्यंत जल में ३ या ४ बार पिलाने से बालकों का अजीर्ण नष्ट होता है। पेट की पीड़ा मिटती है तथा सदा सेवन कराने से बालक हृष्ट-पुष्ट और बलवान बना रहता है।

ज्वर की चिकित्सा

वात, पित्त और कफ से उत्पन्न ज्वर और विषम ज्वर जिस प्रकार पुरुषों को होते हैं, उसी प्रकार बालकों को भी होते हैं। अत: दोषानुसार ही औषधियों का प्रयोग करना चाहिए।

(१) भद्रमोथा, हरड़, नीम, कड़वे परवल और मुलहठी—इन पाँचों का काढ़ा बनाकर गुनगुना पिलाना चाहिए। इससे सब प्रकार के ज्वरों को आराम हो जाता है।

(२) मुलहठी, हलदी, दारु हल्दी, कटेरी, इंद्रजौ—इनका काढ़ा बनाकर बालकों को पिलाने से ज्वर, श्वास, अतिसार, खाँसी और वमन नाश हो जाते हैं।

(३) यदि दूध पीने वाले बालक को ज्वर चढ़ा हो तो नागरमोथा, अतीस और काकड़ासिंगी—इन तीनों को महीन पीस-छानकर शहद में मिलाकर चटाना चाहिए। इससे खाँसी और वमन नष्ट हो जाते हैं।

(४) लोध, धनिया, इंद्रजौ, सुगंधवाला, आमला और नागरमोथा—इनको महीन पीसकर शहद में चटाने से ज्वरातिसार नहीं रहता।

(५) धनिया, बेलगिरी, धाय के फूल, इंद्रजौ, लोध, और सुगंधवाला—इन सबको पीसकर मधु (शहद) के साथ चटाने से बच्चों का ज्वरातिसार और वात-विकार नाश हो जाता है।

(६) कुटकी का चूर्ण शहद और मिसरी के साथ चटाने से बालकों के ज्वर का नाश हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(७) अजवाइन एक रत्ती, सहदेवी की जड़ चार रत्ती दोनों को पानी में महीन घोटकर थोड़े जल में घोलकर गरम कर दिन में तीन या चार बार पिलाने से बालकों के ज्वर और खाँसी को आराम होता है।

(८) नागरमोथा, नील की छाल, परोरा की पत्ती, मुलहठी और हरड़ एक-एक तोला सबको अधकुट करके दस मात्रा बनालें। एक छटांक पानी में १ मात्रा पकावें और चौथाई जल रह जाने पर नीचे उतार-छानकर शहद मिला दोनों समय इसी प्रकार पान कराने से बालकों का ज्वर नष्ट होता है।

(९) आँवला, नागरमोथा, नीम की छाल, परोरा की पत्ती और हरड़ के काढ़े में शहद मिलाकर दोनों समय सेवन कराने से बालकों के ज्वर में आराम होता है।

(१०) दरियाई नारियल को चिकने पत्थर पर अरक गुलाब के साथ घिसकर २ रत्ती की मात्रा में दो-तीन बार मधु के साथ चटाने से बालकों के ज्वर में आराम होता है। अन्य वायुविकार भी नष्ट होते हैं।

(११) धान का लावा, मुलहठी, रसौत, वंशलोचन १-१ तोला, इन चारों औषधियों का महीन चूर्ण कर मिसरी १ पाव की चाशनी में मिलाकर अवलेह तैयार करो, प्रातः और सांय १ से ६ मासे तक चटाने से अथवा दूध में घोलकर पिलाने से बालकों के सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

(१२) अतीस ३ माशे, सूखा पोदीना ६ माशे, सफेद निसोत और हरड़ के फल का छिलका एक-एक तोला लेकर, पीसकर, कपड़े में छानकर चूर्ण बना लें। मात्रा एक रत्ती से डेढ़ मासे पर्यंत दिन-रात में ४ बार तुलसीपत्र के रस या माता के दूध में घोलकर पिलाने से बालकों का ज्वर, खाँसी, वमन, श्वास, अतिसार और संग्रहणी आदि रोग नष्ट होते हैं।

(१३) लवंग १ माशा, अतीस, ३ माशे, छोटी इलायची ३ माशे, वंशलोचन ३ माशे, अपामार्ग की हरी पत्ती २ तोला—सबको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पानी के साथ पीसकर खरल में अच्छी तरह घोटकर उड़द बराबर गोली बना छाया में सुखा लें। दिन में ३-४ बार १-१ गोली दुग्ध-शहद के साथ सेवन कराने से बालकों का ज्वर, खाँसी, पसली-रोग, श्वास, कृमि और मिरगी नष्ट होती है।

खाँसी की चिकित्सा

(१) अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, जवासा और पीपल—इनका चूर्ण बनाकर शहद में मिलाकर चटाने से बालकों की पाँचों प्रकार की खाँसी में आराम हो जाता है।

(२) फिटकरी का फूला २ तोला, चौकिया सोहागे का फूला ४ तोले—इन दोनों का चूर्ण दुग्ध और मधु के साथ सेवन कराने से खाँसी नहीं रहती।

(३) धनिया ३ माशे, मिसरी ३ माशे—इन दोनों को पीसकर चावलों के धोवन के साथ पीसकर शहद मिलाकर पिलाने से खाँसी और श्वास निर्मूल हो जाते हैं।

(४) सेंधा नमक, काली मिर्च, सोंठ, पुराना गुड़—इन सबका काढ़ा बनाकर छानकर दोनों समय पिलाने से बालकों की खाँसी नष्ट होती है।

(५) अडूसा, दाख, हरड़ और पीपल—इन सबका चूर्ण बनाकर शहद में मिलाकर ३-४ दिन चटाने से बालकों का श्वास, खाँसी आदि आराम होते हैं।

(६) कटेरी के फूलों के पराग (केशर) को पीसकर उसमें शहद मिलाकर चटाने से बालकों की बहुत दिनों की पुरानी खाँसी में आराम हो जाता है।

(७) दाख, पीपल और सोंठ का चूर्ण शहद और घी में मिलाकर चटाने से बालकों की पाँचों तरह की खाँसी जाती रहती है।

(८) पीपल, मुनक्का, अड़ूसे की जड़ और हरड़ का चूर्ण मधु के साथ चटाने से बालकों की खाँसी और श्वास-रोग नष्ट हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(९) तुलसी के पत्ती का रस ३ माशे गुनगुना करके उसमें ५ बूँद शहद मिलाकर बालकों को ३-३ घंटे बाद ४ बार पिलाने से खाँसी अच्छी हो जाती है और श्वास रोग तो एक ही दिन में चला जाता है।

(१०) जायफल ४ माशे, अगर १ तोला, गदहपुन्ना की जड़ १ तोला, नागकेशर १ तोला, तेजपात १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, दालचीनी १ तोला, पीपल १ तोला, पुष्पकरमूल १ तोला, लोंग १ तोला, शतावर १ तोला, लाल चंदन २ तोला— इन सबका चूर्ण दुग्ध और शहद के साथ २-३ बार देने से बालकों की खाँसी तथा शीत कफ से उत्पन्न हुए रोग-समूह नष्ट हो जाते हैं।

(११) आधी छटाँक भटकटैया की जड़, १ छटाँक मुलहठी को कुचलकर ८ छटाँक पानी में पकावें, जब एक चौथाई शेष रहे उसमें पावभर मिसरी की चाशनी मिलाकर अवलेह तैयार करे। दो-तीन माशे अवलेह दिन-रात में चटाने से बालकों की खाँसी निःसंदेह नष्ट हो जाती है।

(१२) लोंग १ माशा, सेंधा नमक २ माशा, काकड़ासिंगी ४ माशा, अफीम ४ माशा, दालचीनी ४ माशा, १० तोले शरबत खस का अवलेह बनाकर चटाने से बालकों की तर खाँसी जिसमें खाँसने के साथ बलगम अधिक आता हो शीघ्र आराम हो जाता है।

(१३) अनार की कली ६ माशे, अफीम ६ माशे, जायफल ६ माशे, कपूर, चाकसू, नीम की कोंपल १ तोला, बकायन की कोंपल १ तोला, बबूल की कोंपल १ तोला, रसौत १ तोला, हलदी १ तोला सबका चूर्ण कर अदरक के रस में घोटकर काली मिर्च के बराबर गोली बना लो, माता के दुग्ध और शहद के साथ सेवन कराने से बालकों की खाँसी, दस्त और शीत के विकार से उत्पन्न हुए रोग शीघ्र ही शांत हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुकर खाँसी

यह खाँसी क्षण-क्षण पर आती है तथा इसमें बलगम नहीं आता। यह कभी-कभी बालकों में भी फैल जाती है, यह लगभग ४० दिन तक रहती है। किसी एक बालक के हो जाने पर उसी घर या गाँव के अधिकांश बालकों में हो जाती है। यह बालक और बड़ों सभी को दुःखदायी होती है। इससे बालक खाँसते-खाँसते वमन और मल-मूत्र कर देते हैं। आँखें निकल आती हैं। कभी-कभी बेहोशी भी हो जाती है। श्वास रुक जाता है। यह मृत्युकारक तो नहीं होती किंतु इसके कारण बालक को भीषण कष्ट उठाना पड़ता है। यह खाँसी तीन प्रकार की होती है—

पहली—यह खाँसी आठ दिन, दस दिन के बाद अच्छी हो जाती है। इसमें हलके ज्वर के साथ सूखी खाँसी उठती है। खाँसते-खाँसते बालक का मुँह लाल पड़ जाता है।

दूसरे प्रकार की खाँसी जिसमें प्रथम ज्वर आता है, पीछे खाँसी होती है। खाँसते समय जब मुख से बलगम या वमन हो जाती है, तब यह कुछ समय के लिए शांत हो जाती है। कफ निकलने से पहले बच्चे को बहुत ही कष्ट होता है। कफ निकल जाने के बाद बालक सुख का अनुभव करता है। कभी-कभी इस खाँसी में किसी-किसी बालक के मुँह से रक्त भी आ जाता है और बालक के नेत्रों का रंग लाल हो जाता है।

तीसरे प्रकार की खाँसी, जिसकी अवधि १॥ महीने से २ महीने तक अथवा इससे भी ज्यादा होती है, इसमें ज्वर नहीं आता और रात में नींद नहीं आने देती। यह रात और दिन में २०-२५ बार उठती है।

कुकर खाँसी का इलाज

(१) अदरक का रस घी में जलाकर दूध के साथ देने से कुकर खाँसी अच्छी हो जाती है।

(२) छोटी पीपल, छोटी इलायची के दाने, कड़वी अतीस, नागरमोथा बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनाकर १ रत्ती शहद के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) कटुफलादि चूर्ण ४ रत्ती की मात्रा में शहद व अदरक के रस में चटाना चाहिए। शरबत बनफशा के साथ खिलाने पर भी गुणकारी है।

नेत्र रोग और चिकित्सा

सुश्रुत के मतानुसार चक्षु रोग ७६ प्रकार के होते हैं। किंतु बालकों की आँखों में ३ प्रकार के रोग अधिकांश हुआ करते हैं।

(१) अभिष्यंद (२) कुकूणक (३) फूली।

(१) अभिष्यंद रोग

इस रोग में आँखें उठ जाती हैं और इनमें कोंचने के सदृश पीड़ा होती है। रक्त के समान लाली, दाह, खुजली और पलक सूज जाते हैं, आँसू बहते हैं, कीचड़ आता है तथा पलक चिपक जाते हैं। यदि इस रोग में समय पर उचित उपचार न किया तो भयानक हो जाता है और फूली आदि पड़कर आँखों के नष्ट होने का भय रहता है।

अभिष्यंद पर चिकित्सा

(१) अनार की पत्ती को पानी में पीसकर पलकों पर लेप करने से तुरंत लाभ होता है।

(२) २ रत्ती अफीम लेकर लोहे के पात्र में इमली की पत्तियों के रस में पकाकर पलकों पर लेप करने से ललाई और पीड़ा दूर होती है।

(३) आँवला और लोध पानी में पीसकर पलकों पर गुनगुना लेप करने से तुरंत लाभ होता है। आँख का दरद और सुरखी शीघ्र नष्ट हो जाती है।

(४) रसौत पानी में घोलकर आँखों में डालने से पीड़ा और ललाई दोनों मिट जाते हैं।

(५) अफीम २ रत्ती, फुलाई हुई फिटकरी १ माशा, रसौत १ माशा, लोध १ माशा, कागजी नीबू के रस में घोट गरम कर पलकों पर लेप से ललाई, पीड़ा और पानी के बहने में आराम होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(६) गेरू, चमेली का फूल, मुलहठी, लोध और सफेद चंदन समान भाग पानी में पीसकर पलकों पर लेप करने से शीघ्र ही आँखों की पीड़ा, ललाई, दाह, खुजली और पानी का बहना बंद होता है।

(७) आँवले की मिंगी ३ माशे, बहेड़े की मिंगी ३ माशे, हर्रा के फलों की मिंगी ३ माशे लेकर इन्हीं तीनों फलों के छिलके के काढ़े में घोलकर चने के बराबर गोलियाँ बनावे। पानी में घिसकर इसे आँख में मंजन करने से आँखों की ललाई, पीड़ा और पानी का बहना बंद हो जाता है।

(२) कुकूणक रोग

दूषित दूध के पीने से वातादि दोष क्रुद्ध होकर बालकों की आँखों के पलकों में यह रोग हो जाता है। इससे पलकों में पीड़ा व खुजली होती है। आँखों से पानी ढलता है। इस रोग के कारण प्राय: बच्चा अपने आँख, नाक और मस्तक को बार-बार मलता है। सूर्य के प्रकाश की ओर देख नहीं सकता।

सरल चिकित्सा—

(१) कंजा का बीज ३ माशा, मैनसिल ३ माशा, कालीमर्च, रसौत, शंखनाभि ३-३ माशा लेकर कपड़छन चूर्ण कर रख लें। थोड़ा सा चूर्ण पान में घोटकर आँखों में आंजने से नेत्र के संपूर्ण रोग ललाई, कुकूणक, दरद, पानी ढलना, खुजली आदि नष्ट हो जाते हैं।

(२) गाय की ताजा गोबर आग से गरम कर उसको स्वच्छ वस्त्र में रखकर पोटली बनाकर बार-बार पलकों पर फेरने से कुकूणक दूर होता है।

(३) दारु हलदी, नागरमोथा, कुटकी, गेरू, नीम की पत्ती, वायबिडंग, मजीठ, मुलहठी, रसौत, लोध, सेंधा नमक और हलदी ३-३ माशे अधकुट करके कपड़े में पोटली बनाकर बार-बार पानी में डुबोकर पलकों पर फेरने से कुकूणक निस्संदेह नाश हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) आँखों में फूली पड़ना

अधिक दिनों तक आँखें बंद रहने के कारण आँख के काले तिल पर एक सफेद रंग की छड़ सी पड़ जाती है, जिससे आँख का प्रकाश रुँधकर बालक काना अथवा कभी अंधा भी हो जाता है। बस, यही फूली कहलाती है।

फूली दूर करने का उपाय—

(१) शहद और अपामार्ग (ओंगा) की जड़ का रस एक साथ मिलाकर नेत्रों में प्रतिदिन अंजन करते रहने से फूली नष्ट होती है।

(२) नौसादर, अफीम और फिटकरी का फूला बराबर-बराबर लेकर अपामार्ग के स्वरस में घोंटकर अंजन करने से फूली कट जाती है।

(३) ताँबा और सोना मक्खी का चूर्ण समान भाग लेकर कौड़ेनी के रस में घोंटकर अंजन करने से फूली कट जाती है।

दाँत निकलना

जब बच्चे के दाँत निकलते हैं तो उन्हें अनेक रोग आ घेरते हैं। ज्वर, खाँसी, वमन, नेत्र, मस्तिष्क तथा सर्वांग में पीड़ा होने आदि व्यथाएँ आ घेरती हैं। उस समय बच्चे को हरे-पीले दस्त शुरू हो जाते हैं। इस अवस्था में भी बच्चे के ऊपर औषधियों की भरमार नहीं करना चाहिए।

दाँत सुगमता से निकलने के उपचार

(१) आँवला और धव के फूलों का चूर्ण शहद के साथ मसूड़ों पर मलने से लाभ होता है और दाँत शीघ्रता से निकल आते हैं।

(२) बिनौला की गिरी ९ दाने, चावल ९ दाने, अफीम १ रत्ती, बबूल की कोमल पत्ती १ रत्ती—सबको पानी के साथ महीन घोटकर ५ गोली बनालें। माता के दूध में रविवार और मंगलवार को एक-एक गोली घोलकर पिलाने से दाँत सरलता से निकल आते हैं। दाँत निकलते समय ज्वर, खाँसी, वमन, दस्त व शरीर की पीड़ा नष्ट होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) पीपल और धाय के फूल का चूर्ण शहद में फेंटकर मसूड़ों पर उँगली से धीरे-धीरे दिन में ३-४ बार मरदन करने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

(४) केला के फूल के केसर का रस पाँच माशे निकालकर उसमें शहद और मिसरी मिलाकर दिन में ३ बार पिलावें और यही रस मसूड़ों पर मलने से बालकों के दाँत बड़ी सुगमता से निकल आते हैं।

(५) सिरस के बीजों की माला बालक के गले में पहनाने से दाँत सुगमता से निकल आते हैं।

(६) सीप की माला पहनाने से भी दाँत आसानी से निकल आते हैं।

(७) जस्ता और ताँबे का तार मखमल या फलालेन में से किसी एक में लपेटकर ताबीज के समान बना गले में बाँधने से दाँत निकलते समय पीड़ा नहीं होती।

(८) चूना और शहद मिलाकर दंत पाली में लगाने से दाँत आसानी से जम जाते हैं।

(९) सागौन और काकड़ासिंगी डालकर दूध को खूब पकावे और सोते समय उसका पाँवों के तलवे में लेप करने से शीघ्र ही बालकों का सोते समय दाँत चबाना बंद हो जाता है।

(१०) सुहागे को शहद में साथ पीसकर बालकों के मसूड़ों पर मलने से शीघ्र दाँत निकल आते हैं।

(११) कौड़ी की भस्म को शहद के साथ मिलाकर बालकों के मसूड़ों पर मलने से शीघ्र दाँत निकल आते हैं।

कान का दरद

यदि कान के भीतर कोई जीव-जंतु प्रवेश कर जाता है तो मकोय के पत्तों का रस टपकाना चाहिए या कसौंदी के पत्तों का रस कान में डालना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि कान में मैल इकट्ठा हो जाने के कारण दरद होता है तो उसे साफ करके कड़वा तेल गुनगुना कर डालना चाहिए। सुदर्शन के पत्ते का रस डालने से भी कर्ण-पीड़ा दूर हो जाती है।

गले और मुख में घाव

यदि गले और मुख के भीतर घाव या छाले हो जाएँ, तो आँवला और मुलहठी एक-एक तोला कुचलकर एक सेर पानी में पका लें जब आधा सेर रह जाए, तब नीचे उतारकर शीतल करके छान लें। उसमें दो तोले शहद मिला कर थोड़ा-थोड़ा तीन-चार बार पिलाने से और कुल्ली कराने से मुख तथा गले के भीतर का घाव सूखकर आराम होता है।

चेचक-शीतला

अन्य रोगों की भाँति यह भी बालकों के लिए बड़ा दुखदाई है। इसमें बच्चे को प्रथम ज्वर आकर शरीर में फफोले हो जाते हैं, जिनका रंग कुछ ललाई लिए श्याम होता है। इस रोग में ज्वर, दाह, खुजली, हड़फूटन, भयंकर पीड़ा, सिर में दरद, मूर्च्छा, श्वास, वमन, हिचकी, अरुचि, शरीर का लाल, पीला, काला रंग हो जाना, कंप इत्यादि उपद्रव होते हैं।

शीतला की चिकित्सा

(१) ईख की जड़, अनार की छाल, गुरच, मुलहठी का चूर्ण, मुनक्का इन सबको पुराने गुड़ के साथ दोनों समय खिलाने से बिना किसी कष्ट के दाने पककर ढल जाते हैं।

(२) चेचक निकलने के पूर्व ज्वर के आदिकाल में ३ माशे तुलसी के पत्ते का रस निकालकर ४-५ रत्ती श्वेत चंदन घिसकर दोनों समय पिलाने से दानों के निकलने में किसी प्रकार का विकार पैदा नहीं होता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(३) चेचक के दानों में यदि दाह होता है, तो उन पर ५-६ लोंग एक छटाँक गाय के मक्खन या लोंनी में घोटकर बार-बार फफोलों पर लेप करने से दाह शांत होता है।

(४) चेचक के दाने यदि निकलते ही छिप जाएँ तो, कुटकी, आँवला, खस, अडूसे की जड़, नीम की छाल, पित्त पापड़ा, परोरा की पत्ती, लाल चंदन, पाढ़ी—इन सबका क्वाथ बनाकर मिसरी डालकर पिलाना चाहिए।

(५) पीपल, पाकड़, बड़ और सिरस की छाल का चूर्ण बनाकर चेचक के पके हुए दानों पर जिनसे पीव बहता हो बुरकने से लाभ होता है।

(६) शीतला के दानों में दाह होता है तो चौलाई की जड़, चमेली की पत्ती, अनंतमूल, नागकेशर, लालचंदन और सिरस की छाल पानी में पीसकर लेप करना चाहिए, इससे दाह शांत हो जाता है।

चेचक से बचने के उपाय

(१) बहेड़े के बीज, नीम के बीज, हलदी—इन तीनों को शीतल जल में पीस-छानकर कुछ दिन तक पीने से शीतला निकलने का भय नहीं रहता।

(२) वन केले के बीज, भैंस के दूध में पीस-छानकर पिलाने से शीतला का जोर कम होता है।

(३) शीतल जल से हरड़ घिसकर बच्चों को पीस-छानकर पिलाने से शीतला का जोर कम होता है।

(४) शीतल जल में असली रुद्राक्ष घिसकर सात दिन तक प्रात:काल सेवन करने से शीतला का भय नहीं रहता।

(५) बालक के गले में हरड़ का बीज, उसकी माँ के बाएँ हाथ में और पुरुष के दाँए हाथ में भी एक-एक बाँधने से चेचक निकलने का भय नहीं रहता।

(६) इमली के बीज या हलदी शीतल जल में पीसकर ७ दिन सेवन करने से शीतला निकलने का भय नहीं रहता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(७) जिस घर में नित्य शुद्ध वायु प्रवेश करती है तथा धूप, गुग्गुल, गंधक, कपूर, लोहवान, नीम की सूखी पत्ती का धुआँ किया जाता है, वहाँ इस रोग की आशंका नहीं रहती। घर में फिनाइल छिड़कना भी इस रोग का अवरोध है।

(८) घर को बहुधा लिपा हुआ रखना चाहिए।

(९) शीलता रोग के फैलने पर स्वस्थ बालक के खान-पान में बड़ी सावधानी रखनी चाहिए। क्योंकि खटाई, खट्टा दही, नवीन अन्न, बासी रोटी व शाक और लाल मिर्च आदि तथा दूषित जलवायु का सेवन इस रोग के फैलने में सहायक होते हैं।

(१०) शीतला के मौसम में बालक को पूर्वी हवा न लगने दें। पश्चिमी तथा उत्तरी हवा लाभदायक होती है।

मसान रोग

वातादि दोषों से पीड़ित होकर नाड़ियाँ अचेतनावस्था में हो जाती हैं। उस समय मनुष्य अपने शरीर की सुध-बुध भूल जाता है और आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है तथा सुख-दुःख का ध्यान नहीं रहता।

इस रोग में बालक की आँख की पुतलियाँ ऊपर चढ़ जाती हैं हाथ-पैर ऐंठन लगते हैं। हाथ-पैरों की मुट्ठी बँधने लगती हैं तथा संपूर्ण शरीर जकड़ने लगता है।

मूर्च्छा हटाने की विधि

(१) मुँह के ऊपर शीतल जल के छींटे देने से मूर्च्छा दूर हो जाती है तथा शीतल जल से स्नान कराने के अनंतर जल के साथ चंदन घिसकर संपूर्ण मस्तिष्क पर लेप करना चाहिए।

(२) कमलगट्ठा, खस, नागकेशर, बेर की गुठली और सफेद चंदन बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनाकर दूध और शहद के साथ पिलाने से बालकों की मूर्च्छा नष्ट हो जाती है।

(३) कंडे की राख, बकायन और सोंठ के चूर्ण का धुँआ देने से मूर्च्छा शांत होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिरगी, मसान और उनकी चिकित्सा

वातादि दोष के आधिक्य से मनुष्य की स्मरण शक्ति का विनाश हो जाता है और उसे सर्वत्र अंधकार ही अंधकार दिखलाई देता है। इस रोग का संबंध मस्तिष्क से है। जब इसका आक्रमण होता है तो प्रथम नेत्रों के सामने कई प्रकार का रंग दिखलाई देता है फिर मूर्च्छा आ जाती है। शरीर काँपने लगता हैं। दाँत चबाना, मुँह से झाग गिरना, साँस लेते समय खिंचावट, आँखों का चढ़ना तथा उनके रंग-परिवर्तन होना आदि लक्षण मृगी रोग में होते हैं।

चिकित्सा—

(१) किसी साफ कपड़े में हींग या जायफल बाँधकर बालक के गले में बाँधने से मिरगी दूर हो जाती है।

(२) बच के चूर्ण की पोटली बनाकर सुँघाने से बालक की मिरगी का दौरा शीघ्र घटता है।

(३) मस्तिष्क और सिर पर शीतल जल का तरेरा देना चाहिए। हाथ-पाँव को ठंढे जल में डाल रखने से मिरगी का दौरा शीघ्र दूर होता है।

(४) मिरगी आने पर मिरगी वाले के कान में जोर का शब्द करना चाहिए या बार-बार जोर से आवाज देना चाहिए।

(५) पिसी हुई राई की पोटली बनाकर बार-बार सुँघाने से मिरगी का वेग घट जाता है।

(६) अकरकरा का चूर्ण दोनों समय शहद के साथ चटाने से बालक की मिरगी अवश्य दूर होती है।

(७) गाय का १० छटाँक घी कढ़ाई में चढ़ाकर इसमें १ सेर गाय का दूध और १ सेर गाय की दही पकावे। जब घृत मात्र शेष रहे उतार कर छान ले। इस घृत को दोनों समय सेवन कराने से बालकों का मिरगी रोग शांत हो जाता है।

(८) एक माशे ब्राह्मी के रस में बालबच और कुलंजन घिसकर पिलाने से बालकों की मिरगी शांत हो जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(९) १२ माशे मीठे तेल में ४ तोले ब्राह्मी का रस पकाकर यही तेल सिर पर मलने से बालकों की मिरगी शांत हो जाती है।

(१०) सफेद प्याज के रस का नस्य देने से मिरगी जाती रहती है।

तृषा रोग तथा उसकी चिकित्सा

शरीर में उष्णता की अधिकता होने से मुख, कंठ, ओठ और तालू सूख जाते हैं। शरीर में जलन, संताप, मोह, भ्रम आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। प्यास की गति तीव्र होती है।

चिकित्सा यह करनी चाहिए

(१) तृषा रोग में आम की पत्ती, पीपल, जामुन के पत्ते मुलहठी का चूर्ण पानी के साथ घोटकर शहद के साथ चटाने से प्यास दूर होती है।

(२) प्रियंगु, नागरमोथा और रसौत का चूर्ण शहद के साथ चटाने से प्यास दूर होती है।

(३) पलास की छाल, सेंधा नमक और हींग का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से तृषा शांत होती है।

(४) जीरा, नागकेशर और अनार के दाने तीनों का चूर्ण बनाकर मिसरी और शहद में मिलाकर चटाने से बालकों की प्यास कम हो जाती है।

विशूचिका या हैजा

विशूचिका में बालक को अजीर्ण होने के कारण वमन और पतले दस्त होने लगते हैं। प्यास अधिक लगती है तथा मूत्र में रूकावट आ जाती है।

कपूर ६ माशे, अफीम ६ माशे, काली मिर्च ६ माशे, फुलाई हुई हींग ६ माशा—इन सबको गुलाब जल में घोटकर सरसों के बराबर गोली बना लें। हैजा के कुपित होने पर १ गोली प्याज के रस में घोलकर पिला देने से हैजा में आराम होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक के हकलाने या तुतलाने पर

यदि बालक हकलाता हो जिसके कारण शब्दोच्चारण स्पष्ट न होता हो तो—

(१) छोटी ब्राह्मी की ताजी पत्ती कुछ दिन खिलाने से जिह्वा पतली होकर तुतलाना बंद हो जाता है।

(२) नीम गिलोय, अपामार्ग की जड़, कचूर, कौड़ेली, सोंठ, हरड़, बाल बच और बायविडंग—ये सब वस्तुएँ आधी-आधी छटाँक लेकर १ सेर घी और बकरी के चार सेर दूध में सिद्ध कर घृत शेष रहने पर बालकों के कुछ समय तक नित्यप्रति सेवन से उनका हकलाना दूर हो जाता है।

(३) मुलहठी, पीपल, कूट, बालबच, सेंधा नमक, अजवाइन, हरड़, सोंठ—इन सबको कूटकर दूध के साथ कल्क बनावें, फिर उस कल्क को ४ सेर दूध और १ सेर घी के साथ मंद-मंद अग्नि से कढ़ाई में पीसकर घी मात्र शेष रह जाने पर उतारकर छान लें। बालक को कुछ समय तक इस घी का सेवन कराने से उसकी हकलाहट दूर हो जाती है और स्पष्ट बोलने लगता है।

(४) अनंतमूल, पीपल, बालबच, कूट, ब्राह्मी, सेंधा नमक, सफेद सरसों—ये चीजें आधी छटाँक, १ सेर घी, २ सेर पानी इनको सिद्ध कर सेवन करने से हकलापन दूर हो जाता तथा इससे स्मरण शक्ति बढ़ती और बुद्धि में भी विकास होता है।

शय्या पर मूत्र लगना

प्रायः छोटे बच्चे जहाँ चाहते हैं पेशाब कर देते हैं। उनके लिए सब स्थान तुल्य होता है। जिन बच्चों की आदत बचपन में खाट में पेशाब करने की थी और बड़े होकर भी नहीं छूटी उन्हें—

(१) पानी के साथ पिसा हुआ धनिया, मिसरी मिलाकर थोड़े से जल में छानकर सेवन से बालकों का पलंग पर मूतना बंद हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) शीतल जल के साथ, शीतल चीनी का चूर्ण निरंतर सेवन कराने से बालक का शैय्या पर मूतना छूट जाता है।

मोतीझिरा

मोतीझिरा जिसे संतत ज्वर या म्यादी बुखार भी कहते हैं, विशेष कर बच्चों को अधिक होता है। ७-८ साल के बच्चे प्राय: इस रोग से मारे जाते हैं। कभी-कभी यह जवान मनुष्य को भी निकल आता है, किंतु कम निकलता है।

(१) श्वेत रेशम जिसमें कोई मिलावट न हो एक तोला किसी बरतन में जलाकर हाथ से मीड़कर कपड़े में छान लें, १ तोले काली हींग को जलाकर उसको भी मीड़कर राख कर लें। एक तोले काली मिर्च जलाकर इनको कपड़छन कर तीनों का बराबर चूर्ण तोलकर एक जगह मिला लें।

बच्चे को १-१ आना भर दोनों समय शहद के साथ चटाने से लाभ होता है।

(२) नागरमोथा, छोटी पीपल, तुलसी पत्र, अडूसा की पत्ती, लोंग, सोंठ, निर्गुंडी और अजवाइन—इनका क्वाथ बना आठवाँ भाग शेष रह जाने पर मोतीझिरा में पिलाने से लाभ होता है।

रोगी उस कमरे में हो जहाँ सूर्य का प्रकाश पहुँच सकता हो। बिछौने बिलकुल स्वच्छ और सफेद हों। कमरे में घी का दीपक जलाना चाहिए। रोगी की देख-रेख करने वाले के अतिरिक्त वहाँ अधिक आदमी न जाने पावें। ज्वर के अंत में रोगी को मूंग अथवा परवल का यूष देना चाहिए। इसी प्रकार हलके पदार्थ खिलाने से रोगी कुछ ही समय में स्वस्थ हो जाता है, किंतु स्मरण रहे कि ज्वरांत होते ज्वर विनाशक औषधि बंद न की जावें।

अधिक रोना

स्वस्थ बालक के अधिक रोने पर उसे त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आँवला) और पीपल का चूर्ण शहद अथवा घी में मिलाकर प्रात: संध्या चटाने से बालकों का रोना बंद हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१) उड़द, इंद्र जौ, बेलपत्र, हलदी, सिरस की पत्ती और छछूँदर की लेंड़ी—इन सबको बराबर-बराबर कूट अग्नि पर डालकर धूमनी देने से बालक का रोना बंद हो जाता है।

रात्रि को डरना

छोटे बच्चे रात्रि को अच्छे भले सोते हैं। लेकिन सोते-सोते वह रात में अचानक डरकर बैठ जाते हैं। उनके मुख पर भय छाया हुआ होता है। वह रोने और चिल्लाने लगते हैं और पीछे की तरफ खिंचने लगते हैं, जैसे किसी भयानक मूर्ति से डर रहा हो। अपनी माँ या बाप को रक्षा के लिए चिल्लाता है। घर वालों के अनेक प्रकार से सांत्वना देने पर भी उसके अंदर का भय नहीं निकलता। आँखें खुली हुई तथा पुतली फैली हुई होती हैं। चेहरे का रंग लाल हो जाता है। यह दशा किसी-किसी बच्चे की तो थोड़ी ही देर तक रहती है तथा माता-पिता के अनेक बार धैर्य बँधाने तथा आश्वासन से यह दशा बदलती जाती है।

यह रोग भोजन के ठीक पचाव न होने से बालकों को होता है। वह बच्चे जो शाम को अधिक भोजन कर लेते हैं अथवा रात्रि में उठकर भोजन करते हैं उन्हें रात को डर लगता है। दिन में भयानक दृश्य देखने से, भूत-प्रेतों की डरावनी कहानियाँ सुनने से भी ये रात को भयभीत होने लगते हैं।

तंग कपड़े पहनकर सो जाने या हाथ छाती पर रख कर सोने से भी रात्रि में बालक भयानक दृश्य देखकर अत्यंत ही घबराता है।

रात्रि-भय की चिकित्सा

बालक को रात्रि में अधिक भोजन नहीं देना चाहिए और सोते हुए को भोजन के लिए नहीं जगाना चाहिए। सोने से पूर्व गरम जल से स्नान कराके मुलायम बिछौने पर सुलाना श्रेष्ठ है। शयनागार खुला हुआ हवादार होना चाहिए। बच्चे के डरने और चिल्लाने के समय उन पर कोप करना व धमकाना उचित नहीं। किंतु उसे प्रेमपूर्वक सांत्वना देना और समझाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए क्योंकि उस समय बालक पूर्ण जाग्रतावस्था में नहीं होता।

(१) मूंगा या रुद्राक्ष की माला बालक के गले में पहनाने से बालक को भय नहीं रहता।

(२) चाँदी के ताबीज में शेर का नाखून बाँधकर बच्चे के गले में बाँधने से रात्रि में वह डरता नहीं।

(३) बच्चे की मानसिक शक्ति को बढ़ाने के उपाय सोचने चाहिए।

(४) बच्चे को जिन्न, भूत आदि के नाम से कदापि नहीं डरना चाहिए।

हिचकी रोग

शरीरस्थ वायु रुक-रुककर ऊपर इस तरह आने लगती है मानो वह कलेजे और आँतों को खींचकर मुख में ला रही हो उस समय उसकी गति तीव्र होती है और हृदय में एक धक्का सा लगता है। यही हिक्वा या हिचकी कहलाती है।

चिकित्सा—

(१) कुटकी का चूर्ण शहद के साथ चटाने से बच्चे की हिचकी और वमन शीघ्र ही शांत हो जाती हैं।

(२) मुलहठी और पीपल का चूर्ण शहद के साथ चटाने से बालकों की हिचकी में आराम हो जाता है।

(३) काकड़ासिंगी, नागरमोथा, मुलहठी, सोनागेरू, सोंठ और हींग—इन सबका चूर्ण शहद के साथ चटाने से हिचकी नहीं आती।

प्लीहा (तिल्ली) और यकृत

पेट में बाईं ओर एक प्रकार की पथरी जिसे प्लीहा या तिल्ली कहते हैं, उसी प्रकार दांई ओर भी एक पथरी होती है। उसे यकृत कहते हैं, वायु के विकृत हो जाने पर इनका आकार बढ़ जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और बच्चे अथवा बड़े पुरुष को बहुत पीड़ा पहुँचती है। इस रोग में ये उपचार लाभदायक हैं—

(१) पीपल डालकर गरम किया हुआ दूध गुनगुना पीने से तिल्ली और यकृत दोनों नष्ट होते है।

(२) अदरक का रस और बकरी का दूध एक साथ मिलाकर पीने से तिल्ली दूर हो जाती है।

(३) गुलाब के अरक में छोटी पीपल चिकने पत्थर पर घिसकर शहद में चटाने से तिल्ली नष्ट होती है।

दुर्बलतानाशक प्रयोग

(१) बालक की दुर्बलता दूर करने के लिए गेहूँ, जौ और बिदारीकंद के चूर्ण को घी और शहद के साथ चटाकर ऊपर से मिसरी मिलाकर गाय का दूध पिलाना चाहिए।

(२) बल के अनुसार ६ माशे से ३ तोले तक छुहारे लेकर पानी से साफ कर गुठली निकालकर दूध में भिगो दो। कुछ समय तक भीगने के बाद निकालकर महीन पीसकर कपड़े में रस निचोड़कर बालक को पिलाना चाहिए। यह रस एक मास से कम अवस्था वाले बच्चे को पिलाने से हानि करता है।

गुदा पक जाना

मल के लगे रहने से अर्थात बालकों की गुदा अच्छी तरह न धोने से, पसीने अथवा रक्त कफ के विकार से बच्चे की गुदा के भीतर ताँबे के रंग के घाव हो जाते हैं और उनमें खुजली आदि बहुत से उपद्रव प्रगट होते हैं।

चिकित्सा—

(१) रसौत, शंखपुष्पी और मुलहठी का चूर्ण बुरकने से या पानी में पीसकर लेप करने से गुदा पाक आराम होता है।

(२) जल को गरम करे और जब वह ठंढा हो जावे उसमें रसौत घोलकर शहद मिलाकर बालकों के पिलाने से गुदा पाक अच्छा हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) विजयसार का चूर्ण बुरकने से भी लाभ होता है।

(४) बेल की छाल, पाकड़ की छाल, बहेड़ा, आँवला और हरड़—इनके क्वाथ से बार-बार गुदा को धोना चाहिए। ऊपर छोटी इलायची का दाना, भुनी हुई तूतिया, मैनसिल, कसीस और रसौत का चूर्ण कांजी के साथ पीसकर लेप करना चाहिए।

(५) सुरमा, शंखनाभि और मुलहठी को पानी में पीसकर लेप करने से बालक की गुदा में खुजली और व्रण शीघ्र सूखकर आराम हो जाता है।

बालकों के लिए घुटी

(१) केशर, जायफल, काकड़ासिंगी, नागकेशर, वंशलोचन और मुलहठी, एक-एक तोला लेकर पिलाने से अजीर्ण, उदर पीड़ा और मंदाग्नि नष्ट होती है तथा बालकों को अचानक कोई रोग नहीं होता।

(२) यदि छोटी अवस्था का बालक दूध न पीता हो तो हरड़ और आँवला का चूर्ण बनाकर उसमें से १ रत्ती चूर्ण लेकर शहद में मिलाकर उँगली से बालक की जिह्वा पर मलना चाहिए। इस प्रकार वह दूध पीने लग जाएगा।

खुजली रोग

बालक के शरीर में छोटी-छोटी बहुत-सी फुंसियाँ जिनमें खुजली और जलन होती है, निकल आती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं, एक छोटी दूसरी फफोले जैसी। छोटी फुंसियों में केवल रह-रहकर तीव्र खुजलाहट चलती है तथा बड़ी फुंसियाँ पककर उनसे दूषित रक्त बहने लगता है और घाव हो जाते हैं।

इलाज यह है—

(१) चावल और काले तिल पानी में पीसकर बच्चे की नाभि पर लेप करने से खुजली मिटती है।

(२) राई, हलदी, इंद्रजौ, कूट और घर का धुआँ पानी में महीन पीसकर लेप करने से दोनों प्रकार की खुजली नष्ट हो जाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(३) सफेद चंदन, पद्माख और खस को पानी के साथ पीसकर लेप करने से बालकों की खुजली दूर होती है।

(४) खुजली वाले बालक को कूट, बच और वायविडंग के काढ़े से स्नान कराने से खुजली नष्ट होती है।

फोड़ा-फुंसियों का इलाज

(१) बालक के शरीर में फोड़ा हो जाने पर घी में मिलाकर आँवला की राख लगानी चाहिए।

(२) यदि फोड़े-फुंसियों की संख्या अधिक हो तो आँवलों को दही को भिगोकर लगाना चाहिए।

(३) नीम की छाल को पानी में घिसकर लगाने से भी फुंसियाँ नहीं रहती।

(४) बालक के शरीर में फुंसियाँ होने पर रेवंद चीनी की लकड़ी पानी में घिसकर लेप करना चाहिए।

(५) किसी अंग में सूखा दरद हो तो हलदी, फिटकरी, नौसादर और सुहागा—इन सबको गौ मूत्र में पीसकर पेट पर गरम-गरम लेप करना चाहिए।

होठ और जीभ फटना

प्राय: बालकों के तथा बड़े पुरुषों के होठ खुश्की के कारण फट जाते हैं और उनमें वायु के आघात से पीड़ा होने लगती है। होठों के फट जाने पर—

(१) पानी में पीसकर तरबूज की मिंगी होठों और जीभ पर मलनी चाहिए। इससे फटना बंद होकर चिकनाई आती है।

(२) पिसा हुआ नमक लौनी घी में मिलाकर होठों पर मलने से फटने बंद होकर नरम हो जाते हैं।

(३) सिर में जूँ पड़ जाने पर बिनौला को पानी में मिलाकर लगाना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दस्त रुक जाना

(१) यदि बालक के दस्त रुक गए हों तो एक छुआरा पानी में भिगोकर रख दो १२ घंटे भीगने पर उसे उसी जल में निचोड़कर फेंक दो। उस पानी को पिलाने से दस्त हो जाते हैं।

(२) थोड़े से गुलाब के फूल मिसरी या चीनी के साथ खिलाकर ऊपर से पानी पिलाना चाहिए।

(३) एक तोले हरड़ और दो तोले दाख, कूट-पीसकर ३ माशे बच्चे को और आठ माशे बड़े मनुष्य को खिलाने से दस्त सहज में हो जाते हैं।

शरीर की सूजन

(१) घी और काली मिर्च खाने से सूजन पटक जाती है।

(२) देवदारु, नागरमोथा, इंद्र जौ और पेठे के बीज पीने से बालकों की सूजन पटक जाती है।

लू लगने पर

(१) बच्चे को लू लगने पर जल में धनिया पीसकर मिसरी मिलाकर खिलाने से लू शांत हो जाती है।

(२) कच्चे आम को भूभल में भूलभुलाकर उसका गूदा पानी में निचोड़कर चीनी डालकर पीने से लू शांत हो जाती है।

विषैले कीड़ों के काटने पर

(१) किसी विषैली मक्खी या कीड़े-मकोड़े के काटने या डंक मारने पर डंक लगे स्थान पर प्याज का रस लगा देने से पीड़ा नहीं रहती।

(२) हुलहुल के पत्तों का रस उस स्थान पर लगाने से विष उतर जाता है।

(३) सेंधा नमक घी में मिलाकर बार-बार लगाना चाहिए।

(४) जीरे को जल में पीसकर लुगदी बना लो उसमें घी और सेंधा नमक मिलाकर गरम कर कीड़ों के काटे स्थान पर लेप करने से विष नष्ट हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालकों की स्वास्थ्य-रक्षा के कुछ नियम

(१) अकसर बालक अधिक भोजन करते रहने के कारण बीमार पड़ते हैं। बालक की पाचनशक्ति और भोजन के पचने की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए नया भोजन तब देना चाहिए जब पहला पच जाए।

(२) उन्हें अधिक देर गोदी में न चढ़ाते रहिए, खुली हवा और स्वच्छ भूमि में प्रसन्नतापूर्वक खेलने-कूदने दीजिए।

(३) उन्हें अनावश्यक कपड़े, जूते मोजे आदि न पहनाइए। सरदी-गरमी से बचाने के लिए जितना कपड़ा आवश्यक है उससे अधिक कपड़े न पहनाइए। उनके शरीर से खुली हवा का स्पर्श होने दीजिए।

(४) दूध और फल बालकों का सर्वोत्तम भोजन है, यह ताजे निर्दोष खाने चाहिए। मिठाई, पकवान तथा चटपटी चीजों से उन्हें बचाइए यह उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

(५) सोते वक्त उनका मुँह खुला रहने दीजिए, ताकि वे शुद्ध हवा में साँस ले सकें।

(६) उन्हें मारिए-पीटिए नहीं और न डराइए-धमकाइए। इससे उनकी आंतरिक शक्ति निर्बल होती है।

(७) उन्हें झिड़किए नहीं, उनकी गलती को स्वयं दोहराकर अपना मनोरंजन न कीजिए, जहाँ वे भूल रहे हों उन्हें समझाइए, जो जानना चाहते हों बताइए। क्रोध की अपेक्षा प्रेम से उन्हें इच्छानुगामी बनाइए।

(८) उन्हें स्वच्छ रखिए, स्वच्छ रहने की रुचि पैदा कीजिए, इस दशा में उन्हें प्रोत्साहन और प्रलोभन दीजिए।

(९) दुलार इतना न कीजिए कि वे ठीक, उद्दंड, अवज्ञाकारी और मचलने वाले बन जावें, जो दोष उत्पन्न हो रहा हो या बढ़ रहा हो उसे आंरभ से ही नियंत्रित कीजिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१०) उनको खेलने-कूदने, मनोरंजन करने, ज्ञान प्राप्त करने और भ्रमण करने की पर्याप्त सुविधा दीजिए। तंग दायरे में कैद रहने वाले बालकों का विकास रुकता है। खाली रहने पर वे बार-बार अनावश्यक भोजन माँगते और खाते रहते हैं जो उन्हें बीमार बनाने का प्रमुख कारण होता है।

(११) गंदे, रोगी, चिड़चिड़े और बुरे स्वभाव के लोगों के साथ बच्चों को न रहने दीजिए उनकी छूत का प्रभाव पड़ सकता है।

(१२) जेवर मत पहनाइए। गरदन में लटकना न लादिए। इनके कारण रक्त-संचार में बाधा पड़ती है और उनके गड्ढों में गंदगी तथा बीमारी के कीड़े धँसे रहने का खतरा रहता है। कभी-कभी जेवरों के कारण बच्चों की जान जोखिम में पड़ जाती है।

(१३) बालक छोटा है, नासमझ है, यह अभी क्या जानता है, ऐसा समझकर आप उसके सामने कोई ऐसा कार्य न कीजिए जो बड़ी आयु के व्यक्ति के सामने नहीं किया जा सकता है। बालकों की सीखने की शक्ति बड़ी तीव्र होती है, वे अज्ञान होते हुए भी बहुत कुछ सीखते हैं।

(१४) दवाओं के अधिक सेवन से उन्हें बचाइए। दवाएँ तभी दीजिए, जब वे खतरे में हों। साधारण अस्वस्थता को प्रकृतितः ही ठीक होने दीजिए।

(१५) जो बच्चे दूध पीते हैं उनकी माताओं का आहार-विहार बहुत ही संतुलित होना चाहिए।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org